Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **08.08.14** मस्जिद बैतुल फ़तूह, लंदन।

हमारा हथियार केवल दुआ है और दिलों की पवित्रता, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छानुसार अपने जीवन में पाक तबदीलियां पैदा करते हुए अपने सारे काम ख़ुदा तआला की पसन्नता अनुसार करने वाले हों। इसके लिए सदा पयासरत रहें। उसके सम्मुख सदा दर्द भरी दुआओं की ओर ध्यान करने वाले हों।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ न निम्नलिखित आयत की तिलावत फ़रमाइ [٢٧:٦٣] أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ ۗ أَإِلَٰهٌ مَّعَ اللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ

इस आयत का अनुवाद यह है कि या फिर वह कौन है जो व्याकुलता में दुआ क़बूल करता है, जब वह उसे पुकारे तथा कठिनाई दूर कर देता है और तुम्हें ज़मीन के वारिस बनाता है। क्या अल्लाह से अतिरिक्त अन्य कोई पूज्य है? बहुत कम है जो तुम नसीहत पकड़ते हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार बार अपनी जमाअत के लोगों को यही ध्यान दिलाया है कि दुआओं की ओर अत्यधिक ध्यान करो क्यूंकि जमाअत का विकास, जमाअत का पभुत्व तथा दुश्मनों की चालों और उनकी कार्यवाहियों से मुक्ति दुआओं ही से मिलनी हैं। आपने बड़ा स्पष्ट फ़रमाया कि हमारा पभुत्वता पाप्त करने का हथियार दुआ ही है। अतः जब हमने प्रत्येक पगति दुआओं के कारण ही देखनी है और हर एक दुश्मन को दुआओं से पराजित करना है तो फिर दुआ के इस महत्व को सम्मुख रखते हुए कितना ध्यान हमें दुआओं की ओर देना चाहिए और कितना ध्यान हम इस लक्ष्य की पाप्ति के लिए दुआओं की ओर दे रहे हैं इसका अनुमान एंव आंकलन हममें से हर एक अपनी हालत को देखकर लगा सकता है और निरीक्षण कर सकता है।

पिछले दिनों मुझे एक अज़ीज़ ने अपना सपना सुनाया कि मैं उस अज़ीज़ को कह रहा हूँ कि रमज़ान बड़ी जल्दी समाप्त हो गया अभी तो मैं ने और अधिक दुआएं करानी थीं। इस सपने को सुनने से पहले ही मेरे दिल में यह परणा थी, अल्लाह तआला ने डाला कि रमज़ान के अन्तिम ख़ुत्बः में भी दुआओं की ओर ध्यान दिलाऊँ। इस लिए उस व्यक्ति का सपना मेरे समर्थन में ही था इसमें और अधिक इस ओर ध्यान दिलाया। इस समय दुनिया के हालात विशेषकर मुस्लिम उम्मत के हालात, फ़लिस्तीनियों पर जो इसराईल का लगातार ज़ालिमाना आकमण है। अल्लाह करे कोई ऐसी सूरत पैदा हो कि यह युद्ध विराम सदा के लिए हो जाए और अत्याचार बन्द हो। और फिर हम यह भी देखते हैं कि मुसलमानों का एक दूसरे पर अत्याचार, गरदनें उड़ाना तथा वद्ध एंव विनाश, यह भी अपनी चरम सीमा पर है और फिर इन कलिमा पढ़ने वालों की ओर से अत्याचार की चरम सीमा यह है कि अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर अहमदियों पर अत्याचार कर रहे हैं और हर समय अहमदियों को कठिनाई में डालना तथा अत्याचार करना अब पाकिस्तान में मुल्लाओं के पभाव में ग़ैर अहमदियों का अधिकांश भाग अथवा बहुत बड़ी संख्या का चलन बन चुका है। और नई पीढ़ी के बच्चों में भी यह ज़हर घोला जा रहा है उनके दिमागों को दूषित किया जा रहा है उनके मुंह से भी अब ये शब्द निकलते हैं, बच्चों के मुंह से भी, जिनको पता नहीं कि दीन क्या है और क्या नहीं है अथवा दुश्मनी क्या होती है, क्या नहीं कि अहमदी काफ़िर हैं और उनको क़त्ल करना जायज़ है। स्कुलां में अहमदी उस्तादों के साथ बच्चे इस लिए दुर्व्यवहार करते हैं कि यह अहमदी है इसको जो चाहे कहो, स्कूलों से निकालने की कार्यवाइयां होती हैं, उनसे पढ़ने से इंकार किया जाता है। और यह डिठाई किसी भी घटना के बाद कम नहों होती। यह नहीं कि मानवता के विरुद्ध अत्याचारों को देखकर फिर किसी पकार लज्जा का आभास उनमें पैदा हो जाए बल्कि वही हाल रहता है। इन परीक्षाओं के दौर में हमें पहले से बढ़कर अल्लाह तआला की ओर झुकने की आवश्यकता है। अतः अपनी दुआओं में कमी न आने दें। शेष मुसलमान तो एक दूसरे पर अत्याचार का जवाब अत्याचार से देकर अपना हिसाब पूरा कर लेते हैं परन्तु हमने तो पत्येक अत्याचार को दर्द भरी याचनाओं में डूब कर समाप्त करना है। अल्लाह तआला के सम्मुख गिड़गिड़ा कर उससे दुआ मांग कर इसे समाप्त करना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी एक पंक्ति में फ़रमाया था कि- ''उदू जब बढ़ गया शोरो फ़िग़ाँ में, निहां हम हो गए यारे निहां में''

अतः यार निहां में डूबने की आवश्यकता है अपने भीतर वे लक्षण पैदा करने की आवश्यकता है जो अर्श के पाए हिला देने वाली हो। वे दुआएं करने की आवश्यकता है जिनकी दिशा एक ओर हो, विविध दुआएं न हों। उस अज़ीज़ क सपने में जो यह बताया गया है

कि अभी मैं ने जमाअत से दुआएं करानी थीं, मैं उसको कह रहा हूँ। तो जमाअत से पूरी जमाअत के रूप में दुआएं कराना जमाअत की उन्नति एंव सफलताओं के तथा उन कठिनाइयों के दूर होने के लिए थीं। अतः जब हमारी, हर एक की यह अभिलाषा है कि यह परीक्षाओं का दौर जल्दी समाप्त हो तो हमें अपनी दुआओं के धारे जमाअती दुआओं और दुश्मन की चाल से बचने के लिए इस ओर करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर मुझे अपना एक पुराना सपना भी याद आ रहा था जिसका मैं पहले भी एक बार वर्णन कर चका हूँ कि यदि जल्द हालात बदलने हैं तो जमाअत को पूरी जमाअत के रूप में अपनी हालतों को अल्लाह तआला के लिए शुद्ध करते हुए अपनी दुआओं को उसके लिए शुद्ध करते हुए, जमाअत को इन परिस्थितयों से बचाने के लिए, उसके आगे झुकने की आवश्यकता है और यदि इस निष्ठा के साथ अल्लाह तआला के आगे झुकेंगे तो कुछ दिनों में, कुछ रातों की दुआओं से इन्क़लाब आ सकता है। जो सूचना मुझे दी गई थी उसमें सारी जमाअत को और जो लोग अपने आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सम्बंधित करते हैं उनका निष्ठा पूर्वक दुआ करना शर्त है। उस समय भी सपने में मुझ पर यही पभाव था कि यह पैग़ाम पाकिस्तान के अहमदियों के लिए है।

अतः पाकिस्तान के अहमदियों को विशेष रूप से इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है तथा दुनिया के अन्य अहमदियों को भी सामूहिक रूप से इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है क्यूंकि अहमदिय्यत की विजय से ही दुनिया का क़ायम रहना सम्बंधित है। मुस्लिम उम्मत का अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का पाप्त करना अहमदिय्यत की विजय से ही सम्बंधित है। अत्याचार एंव दुर्व्यवहार का समाप्त होना इसी से सम्बंधित है। अतः चाहे वह फ़लिस्तीन को अत्याचार से मुक्त कराना है अथवा मुसलमानों के ज़ालिम शासकों को आज़ाद, मुसलमानों को अपने इन निर्दयी शासकों से आज़ाद कराना है। इसकी ज़मानत केवल अहमदियों की दुआएं ही बन सकती हैं इन दुआओं का हमें हक़ अदा करने की आवश्यकता है। इस समय अत्याचार की चक्की में सबसे अधिक अहमदी पिस रहे हैं इस लिए हमारी दुआएं ही वास्तविक दुआओं का रंग धारण करके न केवल अपनी आज़ादी बल्कि मानवता की भी मुक्ति का कारण बन सकती हैं। अतः हमें अपने दायित्व समझने की आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि परीक्षाओं में दुआओं के अदभुत लक्ष्ण तथा पभाव ज़ाहिर होते हैं और सच तो यह कि हमारा ख़ुदा दुआओं से ही पहचाना जाता है। ऐसे में चमत्कारी दुआओं से लाभ पाने के लिए हमें विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। यह आयत जो मैं ने तिलावत की है इसमें अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया है कि देखो कठिनाइयों में पड़े लोगों की दुआओं को कौन सुनता ह, केवल अल्लाह तआला ही सुनता है और जब वे ऐसी परिस्थिति में हो जब व्याकुल हों तो केवल और केवल एक ही रास्ता दिखाई देता है और वह ख़ुदा तआला की ओर जाने का रास्ता है। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि ये व्याकुल हैं जो मेरी आर आते हैं, दुनिया के सारे रास्ते जिनके लिए बन्द हो चुके होते हैं। हर ओर से आग देखने के बाद जब उसे एक ही शांति का रास्ता दिखाई दे रहा हो, उसे एक ही ओर शरण दिखाई दे रही हो और उस विशेष रास्ते की ओर वह चला जाए तो वह ऐसा व्यक्ति है जो व्याकुल कहलाता है और अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उसे मैं आग से बचाने वाला हूँ, मैं उसकी शरण स्थली हूँ। आग से बचाने वाली ठंडी छाँव, मैं हूँ। मेरी ओर आओ, मुझसे शरण मांगो, मैं तुम्हें इन परीक्षाओं से निकालूंगा। तुम्हारी दुआओं के कारण तुम्हें इस कठिनाई से निकालूंगा। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अदभुत एंव अनोखे पभाव तुम्हारे हक़ में ज़ाहिर होंगे।

अतः जो व्यक्ति ऐसा व्याकुल बन जाए जो ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी को दाता एंव सुनने वाला न समझे, अपने लिए कोई शरण स्थल न समझे। जो ख़ुदा के अतिरिक्त किसी अन्य को इन परीक्षाओं से मुक्ति दिलाने वाला न समझे, वही वास्तव में व्याक़ल है और उसकी दुआएं अदभुत दृश्य दिखाने वाली बनती हैं। दुआओं की क़बूलियत के लिए हमें अपने भीतर यह विश्वास उत्पन्न करना होगा कि हर पकार की कठिनाइयों में अल्लाह तआला ही काम आता है। उसके अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं जहां हमें रोशनी की किरण दिखाई देती हो और जब ऐसी स्थिति पैदा हो जाए तो ऐसे व्याकुल के पास अल्लाह तआला अपने वादे के अनुसार दौड़ता हुआ आता है और उसकी व्याकुलता तथा कठिनाइयों को दूर कर देता है। अल्लाह तआला जब पुरस्कार देता है तो उसके पुरस्कार असीमित होते हैं वह किसी भी सीमा तक पुरस्कारों को बढ़ा सकता है। इस पकार यहां भी जब कठिनाइयों में घिरे मोमिनों की कठिनाइयों को दूर करने का अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया तो साथ ही यह भी फ़रमा दिया يَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ कि वह तुम्हें ज़मीन के वारिस बना देता है। वह बड़े बड़े अत्याचारियों, दुष्टों एंव दुष्कर्मियों को नष्ट करके दुर्बल तथा पीड़ित दिखाई देने वालों को उनके स्थान पर बिठा देता है। अतः जहां एकाकी रूप में व्याकुल की दुआ सुनकर अल्लाह तआला उसकी कठिनाई को दूर कर देता है वहीं सामूहिक रंग में भी इन कठिनाइयों एंव परीक्षाओं को दूर करता है। और यही हमें क़ुरआन करीम ने दूसरे स्थान पर बताया है इससे पता चलता है कि जब पहली क़ौमों ने रसूलों के साथ तथा उनकी क़ौमों के साथ अत्याचारिक व्यवहार किया तो अल्लाह तआला कहता है कि हमने उन्हें नष्ट कर दिया तथा पीड़ितों को उनका स्थान दे दिया। पहले वे लोग बड़े महान एंव शक्तिशाली थे परन्तु उनके नाम तक मिट गए। अतः यह नियम आज भी इसी पकार क़ायम है जिस पकार पहली क़ौमों के लिए क़ायम था। इस पकार अल्लाह तआला अत्याचारियों को समाप्त करता है परन्तु जब पीड़ित व्याकुल होकर मता नसरुल्लाह अर्थात अल्लाह की सहायता कब आएगी? की दर्द भरी दुआएं करते हैं तो अल्लाह तआला का रहम जोश में आकर अत्याचारियों के शीघ समाप्त होने के सामान कर देता है। शक्ति एंव अधिकता के भरम में आज जो लोग अत्याचार

करने पर तुले बैठे हैं। यदि कलमा पढ़कर तथा अल्लाह और रसूल का नाम लेकर अत्याचारों की दास्तानें लिखी जाएंगी तो कलमा भी और अल्लाह और उसका रसूल भी ऐसे लोगों से पृथक होने का इज़हार करते हैं। अल्लाह तआला ने अत्याचारियों के बुरे परिणाम की सूचना दी है। परन्तु हमारा काम है कि इन अत्याचारों से जल्दी छुटकारा पाने के लिए हम व्याकुल की दशा अपने अन्दर पैदा करें। अल्लाह तआला की सहायता को व्याकुल होकर पुकारें फिर देखें अल्लाह तआला किस पकार सहायता के लिए आता है हममें से पत्येक को यह हालत पैदा करने की आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि याद रखो कि ख़ुदा तआला अत्यंत निःस्वार्थ है। जब तक अधिकता से तथा बार बार व्याकुलता के साथ दुआ नहीं की जाती वह परवाह नहीं करता। देखो किसी को बीवी अथवा बच्चा बीमार हो या किसी पर कठोर अभियोग हो जाए तो इन बातों के लिए उसे कैसी व्याकुलता होती है। अतः दुआ में भी जब तक सच्ची तड़प तथा व्याकुलता पैदा न हो तब तक वह बिल्कुल व्यर्थ एंव पभाव रहित काम है। क़बूलियत के लिए व्याकुलता शर्त है।

अतः जमाअत की कठिनाइयों को दूर करने के लिए भी हमें इसी व्याकुलता की आवश्यकता है जिस पकार कई बार हम दुआओं में निजि उद्देश्य के लिए दिखाते हैं। अभी हमें निरन्तर दुआओं की आवश्यकता है और जब अल्लाह तआला हमें खुली विजय भी अता फ़रमा देगा तो फिर भी तक़वा पर चलते हुए उसके फ़ज़्लों को समेटने के लिए निरन्तर दुआओं की आवश्यकता होगी। अतः अल्लाह तआला से सम्बंध में कभी भी कमी नहीं होनी चाहिए न एक मोमिन कभी यह सहन कर सकता है। कठिनाइयां में हमें इस्तजाब अर्थात क़बूलियत की आवश्यकता है और सरलताओं तथा समृद्धि में भी हमें ख़ुदा को याद रखने की आवश्यकता है। अतः एक मोमिन कभी स्वार्थी नहीं होता। न ही अस्थाई दुआओं तथा जोश को पर्याप्त समझता है बल्कि हर हाल में ख़ुदा तआला से उसका सम्बंध रहता है और रहना चाहिए। यह ईमान तथा सम्बंध ही एक मोमिन को सामान्य हालात में भी दुआ की क़बूलियत के निशान दिखाता रहता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर फ़रमाय कि याद रखो, अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के सामने झुकना ख़ुदा से काटना है। यह तो एक वास्तविक मोमिन कभी सोच भी नहों सकता कि ख़ुदा से सम्बंध तोड़े परन्तु कई बार दुर्बलताओं के कारण दुआओं में कमी आ जाती है तथा संसारिक मामलों के कारण साधनों की ओर ध्यान चला जाता है। अथवा दुआओं का हक़ अदा नहीं होता। अतः हमें चाहिए कि हममें से पत्येक आत्म निरीक्षण करता रहे कि कभी हम अपने मामलों में इतने न उलझ जाएं कि उन लोगों के लिए दुआओं का आभास न रहे जो जमाअत के लोग होने कारण कठिनाइयों में घिरे हैं। याद रखें जमाअत के हर एक व्यक्ति की दुआ और अल्लाह तआला को उसके रहम, मग़फ़िरत, क्षमा एंव विभिन्न गुणों का वास्ता देकर दुआ जो है यह जमाअत की कठिनाइयां को दूर करने का कारण बनती है।

हदीसों में आता है कि पहली उम्मतों में से एक उम्मत के तीन आदमी थे। एक बार तूफ़ान में फंस गए। वे तूफ़ान से बचने के लिए एक गुफा में चले गए और किसी कारण वश उस तूफ़ान के कारण एक पत्थर लुढ़क कर उस गुफा के मुंह पर आ गिरा और उनके बाहर निकले का मार्ग बन्द हो गया। अर्थात एक छोटी कठिनाई से बचने के लिए गए थे और बड़ी कठिनाई उनपर आ पड़ी। ऐसी परिस्थिति में न कि उनके अपने पयास से वह पत्थर गुफा के मुंह से हटाया जा सकता था और न ही कोई अन्य सहायता उनको मिल सकती थी। जंगल में यह ऐक ऐसी क़ैद थी जिसमें से किसी मनुष्य की चेष्टा द्वारा निकल पाना असम्भव था। ऐसी परिस्थिति में उन पर घोर कठिनाई की हालत छा गई कि अब यहां से निकले का कोई साधन नहीं, यहां से निकलना बड़ा कठिन हो गया है। इन तीन लोगों ने तीन पकार के काम किए थे। किसी ने मज़दूर की मज़दूरी में अमानत का हक़ अदा किया, नियामानुसार बन्दों के हक़ की अदायगी की। किसी ने वालदैन के साथ नेक व्यवहार तथा उनकी सेवा का हक़ अदा किया था तथा तीसरा व्याभिचार के पाप से अल्लाह तआला के लिए बचा और इस संदर्भ में दुआ की। परन्तु उन सबकी दुआओं का उद्देश्य संयुक्त था कि पत्थर हट जाए और वह पत्थर हट गया। अतः ये एकाकी नेकियां तथा एकाकी नेकियों के हवाले से की गई दुआएं सामूहिक क़बूलियत का दृश्य बन गईं।

अतः जहां इस हदीस में अन्य अनेक सबक़ हैं यह बहुत बड़ा सबक़ है कि लोगों की नेकियां तथा दुआएं सामूहिक कठिनाई को दूर करने का कारण बनती हैं। अतः जब हम एक जमाअत में पिरोए जाने का दावा करते हैं तो अपनी दुआओं को ख़ुदा तआला से सामूहिक कठिनाई एंव परीक्षाओं को दूर करने के लिए मांगने की आवश्यकता है। सामूहिक दुआओं में भी वह बेचैनी एंव व्याकुलता पैदा करें जो अपनी निजि कठिनाइयों को दूर करने क लिए एक मनुष्य में पैदा होती है। जमाअत की पगति तथा हालात बदलने के लिए जब दो नफ़्ल नमाज़ पढ़ते हैं। जैसा कि मैं ने कहा था कि पढ़ा करें और अधिकतर लोग मुझे लिखते भी हैं कि हम पढ़ते हैं। ता इसमें दर्द भरी दुआएं करें। इन गुफा में फंसने वाले लोगों की हालत से अनुमान लगाया जा सकता है कि पत्येक संसारिक सहायता स निराश होकर उन्होंने निस्सन्देह अपनी किसी नेकी के हवाले से, जो केवल ख़ुदा तआला के लिए उन्होंने की थी, उसका हवाला देकर दुआ मांगी लेकिन उनकी जो उस समय व्याकुलता की दशा होगी, जो व्याकुलता उन में पैदा हुई होगी, हर ओर से सांसारिक साधनों से जो निराशा थी उससे जो व्याकुलता उत्पन्न हो सकती है मनुष्य उसका अनुमान लगा सकता है।

अतः जहां हमें अपने कर्म केवल ख़ुदा तआला के लिए आरक्षित करने की आवश्यकता है कि ये कर्म दुआ के क़बूल होने में अपनी बड़ी भूमिका निभाते हैं वहीं हमें जमाअत की कठिनाई को अपनी कठिनाई मानते हुए बड़ी विनयता एंव विनमता से उसे दूर करने के लिए दुआ की आवश्यकता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि दुआओं की क़बूलियत के लिए यह भी आवश्यक है कि मनुष्य अपने भीतर पाक तबदीली पैदा करे। यदि कुकर्मों से नहीं बच सकता तथा ख़ुदा तआला की सीमाओं को लांघता है तो दुआओं में कोई पभाव नहीं रहता। फिर एक स्थान पर दुआओं की ओर ध्यान दिलाते हुए आपने फ़रमाया- ''यदि तुम दूसरे लोगों की भांति बनोगे तो ख़ुदा तुम में और उनमें कुछ अन्तर न रखेगा। और तुम स्वंय अपने भीतर विशेष बदलाओ न पैदा करोगे तो फिर ख़ुदा भी तुम्हारे लिए कुछ अन्तर न रखेगा। उत्तम मनुष्य वह है जो ख़ुदा तआला की इच्छानुसार चले परन्तु यदि बाहर कुछ हो तथा भीतर कुछ तो ऐसा मनुष्य मुनाफ़िक़ है और मुनाफ़िक़ काफ़िर से भी बुरा है। सबसे पहले दिलों को शुद्ध करो। मुझे सबसे अधिक इस बात का भय है, हम न तलवार से जीत सकते हैं और न किसी अन्य शक्ति से, हमारा हथियार केवल दुआ है तथा दिलों की पवित्रता''

अल्लाह तआला करे हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अभिलाषा के अनुसार अपने जीवन में पाक तबदीलियां पैदा करते हुए अपने सारे काम ख़ुदा तआला की पसन्नता के अनुसार करने वाले हों। इसके लिए सदा पयासरत रहें। उसके सम्मुख सदा दर्द भरी दुआओं की ओर ध्यान देने वाले हों। अपनी दुआओं में जमाअत की उन्नति तथा परीक्षाओं के दूर होने के लिए वही घार पयास करने वाले हों जो हम अपनी निजि कठिनाइयों में करते हैं। हममें वह घोर पयत्न पैदा हो जमाअत के लिए भी जैसा हम अपने व्यक्तिगत कार्यों में करते हैं। एक होकर हम अपने विरोधियों के दुराचार से बचने के लिए दुआएं करने वाले हों। जब मनुष्य दुसरों के लिए दुआएं करता है तो फ़रिश्ते भी उसके लिए दुआ कर रहे होते हैं। गुफा से पत्थर उस समय हटते हैं जब दुआओं की दिशा एंव उद्देश्य संयुक्त हो। अतः जमाअत के किसी व्यक्ति को इस स्वार्थ में नहीं पड़ना चाहिए कि मैं ठीक हूँ तो बस सब ठीक है। दुनिया के किसी भी छोर पर बसने वाले अहमदी की कठिनाई हम सबकी संयुक्त कठिनाई है इसका आभास हमें होना चाहिए और इसके लिए हमें दुआओं की ओर ध्यान लगाने की आवश्यकता है, केवल आभास ही न हो। यही हथियार है जिसके विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि यह हथियार हमें विजय दिलाएगा। परन्तु यह बात भी हमें याद रखनी चाहिए कि जोश में हम दुश्मनों के बारे में यह दुआ न करें कि ख़ुदा तआला उन पर अथवा विरोधियों के विषय में, कि उन पर कठिनाइयां और पकोप नाज़िल करे। बल्कि यह दुआ करें कि ऐ अल्लाह, जब हम अपनी सफलताएं चाहते हैं। कठिनाइयों एंव परीक्षाओं के निवारण के लिए तुझसे दुआ मांगते हैं। इस कठिनाइयों के दौर को समाप्त करने के लिए हम दुआ करते हैं वहीं ऐ ख़ुदा, हम उन लोगों की भी भलाई चाहते हैं, विनाश नहीं चाहते। हम दुर्बलों को तेरे फ़ज़्लों ने ढका हुआ है और कठोर परिस्थितयों के बावजूद फिर भी हम तेरे फ़ज़्लों के नज़ारे देखते रहते हैं। इसी पकार तू उन लोगों को भी ढक ले और हिदायत दे तो यह बड़ा भागय है हमारा भी और उनका भी। परन्तु यदि तेरा विधान उनको इस योगय नहीं समझता तथा उनको नष्ट करना ही उचित है तो उनको हमारे रास्ते से इस पकार हटा दे कि इसलाम की पगति जो अब तू ने अहमदिय्यत और वास्तविक इसलाम से सम्बंधित की है उसमें उनका रहना रोक न बन सके। अतः जहां यह दुआ भी है वहां अल्लाह तआला का विधान जहां चाहता है वहां पर दुआ भी बन जाएगा। इस पकार हमें दुआ करनी चाहिए, न कि खुली बद्दुआ। अल्लाह तआला हम सबको दुआओं का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar AyyadahullhuTa'la 08.08.201

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....
.....

From; *Office MajlisAnsarullah Bharat,*
Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516
Via; Batala, Dist; Gurdaspur (PUNJAB)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ की स्वीकृति से मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का सालाना इज्तिमा दिनांक 14-15-16 अक्तूबर 2014 दिन मंगल, बुद्ध, जुमेरात को क़ादियान दारुलअमान में आयोजित होगा। इन्शाअल्लाह